10. अमरवाणी

विधा : - कविता

कवि:-कबीर, वृन्द

शब्दार्थ:-	
१. सुमिरन	= स्मरण,याद స్మరించుట, to remember
२. माली	= वनमाली,संरक्षक, తోటమాలి, gardner
३. घड़ा	= संकट, कष्ट, आफ़त, కుండ, pot
४. भूखा	= क्षुधा, ఆకలి, hungry
५. जन	= लोग, प्रजा, ప్రజలు, people
६. नृप	= राजा, शासक, రాజు, king
७. अभ्यास	= प्रयत्न, कोशिश,च ప్రయత్నం, practice
८. जडमति	= मंदमति,मूर्ख, మూర్ఖుడు, fool
९. रसरी	= रस्सी, త్రాడు, rope
१०. सिल	= पत्थर, రాయి , stone
१२. निशान	= प्रतीक,चिह्न, చిహ్నం, symbol

प्रश्न (4 marks)

1.कबीरदास जी के बारे में लिखिए ?

ज. 'कबीर' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि था। उनका जन्म सन् 1398 में हुआ। उनकी मृत्यु 1518 में हुई। वे ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि थे। उनकी माता-पिता का नाम नीरू और नीमा थे। इनके गुरू का नाम रामानंद थे। वे अनपढ़ कवि थे। इनके दोहे ''बीजक'' में संग्रहित हैं।

2. वृन्द जी के बारे में लिखिए ?

ज. वृन्द जी का पूरा नाम ''वृन्दावन दास'' था। इनका जीवनकाल 1643—1723 थे। इनकी प्रसिद्ध रचना 'वृन्द सतसई' थी। इनके दोहे नीतिपरक और उपदेशात्मक होते हैं। वे रीतिकाल के प्रसद्धि कवि थे।

प्रश्न (3 marks)

1. कबीर की दृष्टि में-'किसी काम को धीरे-धीरे करना' इसका क्या तात्पर्य है ?

ज. कबीर कहते हैं कि - 'सारे काम निश्चित समय पर धीरे-धीरे होते हैं। शीघ्रता दिखाने से कोई काम नहीं होता। फल पाने की इच्छा से पेड को सौ घडा पानी से सींचने पर भी कोई फल नहीं मिलता। उसी प्रकार जल्दबाज़ करने से कोई काम नहीं होता।

2. हमें किन प्रयत्नों से सफलता मिल सकती है?

ज. हम मन लगाकर परिश्रम करने से सफलता मिल सकती हैं। मन में श्रद्धा, विश्वास, लगन आदि रखना हैं। इन गुणों से असंभव कार्य भी संभव कर सकते हैं।

3. भगवान का स्मरण कब करना चाहिए ? क्यों ?

ज. भगवान का स्मरण हमेशा करना चाहिए। कबीर कहते हैं कि भगवान का स्मरण दुःख में ही करते हैं। सुखों में हम भगवान का स्मरण नहीं करते हैं। सुख में भगवान का स्मरण करनेवाले को कभी दुःख नहीं होता।

4. अभ्यास का क्या महत्व है ?

ज. हमारे जीवन में अभ्यास का बड़ा महत्व है। अभ्यास करने से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। निरंतर प्रयत्न करने से मूर्ख भी पंडित बन जाता है। जैसे पत्थर पर निशान पड़ना कठिन है। लेकिन निरंतर रस्सी की रगड़ से पत्थर पर निशान पड जाता है।

5. कबीर और वृन्द के दोहों में क्या अंतर स्पष्ट होता है ?

ज. कबीर निगुर्णशाखा के प्रतिनिधि कवि थे। उनके दोहे धार्मिक विषयों पर आधारित है। वे निराकार भगवान की उपासना करते थे। उनके दोहे नीतिपरक और रहस्यवादी भावना रखते हैं।

वृन्द रीतिकाल के कवि थे। इनके दोहे लोकनीति पर आधारित हैं। भक्ति भावना कम है। इनके दोहे नीतिपरक और उपदेशात्मक है।

सारांश (10 marks)

1. कबीर के दोहों से नैतिक गुणों का विकास होता है। स्पष्ट कीजिए।

या

कबीरदास के दोहो के भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

ज. **परिचयः-**

पाठ का नाम	: अमरवाणी
कवि का नाम	: कबीरदास
विधा	: कविता
जीवनकाल	: 1398–1518

रचनाएँ : बीजक

1. कबीर कहते हैं कि सब लोग भगवान का स्मरण दुःख में ही करते हैं। सुखों में हम भगवान का स्मरण नहीं करते हैं। सुख में भगवान का स्मरण करनेवाले को कभी दुःख नहीं होता। भगवान का स्मरण हमेशा करना चाहिए।

2. कबीर कहते हैं कि - 'सारे काम निश्चित समय पर धीरे-धीरे होते हैं। शीघ्रता दिखाने से कोई काम नहीं होता। फल पाने की इच्छा से पेड को सौ घडा पानी से सींचने पर भी कोई फल नहीं मिलता। उसी प्रकार जल्दबाज़ करने से कोई काम नहीं होता।

3. कबीर कहते हैं कि - हे भगवान! कृपा करके मुझे इतनी ही संपत्ति दीजिए- जिससे मैं अपने परिवार का पोषण कर सकूँ। मेरी भूख और साधु लोगों के भूख भी मिटा सकें।

2. वृन्द के दोहों से नैतिक गुणों का विकास होता है। स्पष्ट कीजिए।

या

वृन्द के दोहो के भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

ज. **परिचयः-**

पाठ का नाम : अमरवाणी
कवि का नाम : वृन्द
विधा : कविता
जीवनकाल : 1643–1723
रचनाएँ : वृन्द सतसई

1. वृन्द कहता है कि - अच्छे और महान गुणवालों के सांगत्य से सदा सुख ही मिलता है। जैसे राजा इत्र लगाकर सभा में आने से उसका सुगंध सभी सभासद लेते हैं

2. वृन्द कहता है कि - कोई बुराई काम करके सुख चाहे तो कैसे मिल सकता है। जैसे हम आक का पौधा लगाकर आम का फल प्राप्त नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार भलाई करके ही सुख मिलता है।

2. वृन्द कहता है कि - अभ्यास का बड़ा महत्व है। अभ्यास करने से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। निरंतर प्रयत्न करने से मूर्ख भी पंडित बन जाता है। जैसे पत्थर पर निशान पड़ना कठिन है। लेकिन निरंतर रस्सी की रगड़ से पत्थर पर निशान पड जाता है।

भाषा की बात

1. तत्सम-तद्भव

तत्सम	तद्भव
1. स्मरण	सुमिरन
2. इत्र	इतर

3. रस्सी	रसरी

2. हिंदी अक्षरों में लिखिए।

- **1398** – तेरह सौ अठानवे
- **1643** – सोलह सौ तैंतालीस
- **1723** – सत्रह सौ तेईस

3. विलोम शब्दः

- दुःख X सुख
- स्मरण X विस्मरण
- धीरे X जल्दी
- बुराई X भलाई
- सुजान X मूर्ख
- उत्तम X अधम

*****